ISSN : 2278-4632

JUNI KHYAT

जूनी ख्यात

(सामाजिक विज्ञान, कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका)

A Peer-Reviewed and Listed in UGC Care List

JUNI KHYAT

जूनी ख्यात

(सामाजिक विज्ञान, कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका)

A Peer-Reviewed and Listed in UGC CARE List

ISSN 2278-4632

संपादक

डॉ. बी. एल. भादानी

प्रोफेसर

प्रबंध संपादक

श्याम महर्षि

मरुभूमि शोध संस्थान

संस्कृति भवन

एन.एच. 11, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान

प्रकाशकीय एवं विज्ञापन कार्यालय :
सचिव, मरुभूमि शोध संस्थान, श्रीडूँगरगढ़-331803 (बीकानेर) राज.

Sl.No.	Journal No.	Title	Publisher	ISSN
220		JUNI KHYAT		2278-4632

UGC Journal Details

Name of the Journal : **JUNI KHYAT (Print Form)**
ISSN Number : 2278-4632
e-ISSN Number : NA
Source : **UGC**
Discipline : **Social Science**
Subject : **Social Sciences (all)**
Focus Subject : Cultural Studies
Publisher : Marubhumi Shodh Sansthan, Sri Dungargarh (Bikaner)

ड्राफ्ट/नकद भुगतान भजने का पता :

श्याम महर्षि

सचिव :

मरुभूमि शोध संस्थान

(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति)
श्रीडूँगरगढ़ 331803 (बीकानेर) राज.
फोन : 01565-222670
आलेख सीडी में या निम्न ईमेल पर प्रेषित किया जा सकता है।

चित्र प्राप्ति : **डॉ. राकेश किराड़ू**
ढोला मारू री वात, वि. सं. 1836, सृजनकर्ता मथेरन अभेराम, सृजन स्थल, बीकानेर

सम्पादकीय कार्यालय :

डॉ. बी.एल. भादानी

रांगड़ी चौक, बीकानेर 334001 (राज.)
editor.junikhyat@gmail.com

INDEX

S.No.	TITLE	Page No.
1	A STUDY OF HEALTH INSURANCE LITERACY- CONCEPT AND ANALYSIS BASED ON AWARENESS AND CLAIMS AMONG PRIVATE SECTOR EMPLOYEES	1
2	BITCOIN TENDER SOLUTION	8
3	PNEUMONIA DETECTION USING DEEP LEARNING BASED ON CONVOLUTIONAL NEURAL NETWORK	16
4	FACIAL EXPRESSION RECOGNIZATION USING CONVENTIONAL NEURAL NETWORK	22
5	EXAMINING PAST PERIOD OF HIGH MARKET VOLATILITY AND THEIR IMPACT ON MUTUAL FUND RETURNS	26
6	DECENTRALIZATION AND DEMOCRATIZATION OF HIGHER EDUCATION IN RURAL KARNATAKA: A STUDY OF PANCHAYAT RAJ INSTITUTIONS	32
7	दुर्ग जिले के ग्रामीण एवं शहरी हाई स्कूल के विद्यार्थियों के विकास पर मोबाईल फोन के उपयोग के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।	38
8	कुंजबिहारी चौबे के काव्य में स्वाधीनता के स्वर	46
9	ECONOMIC AND SOCIAL IMPACT OF THE IRON INDUSTRY IN CHHATTISGARH: A COMPREHENSIVE ANALYSIS	49
10	A STUDY ON INVESTORS PREFERENCE TOWARDS VARIOUS INVESTMENTS IN EQUITY MARKET	56
11	EXPLORING CHALLENGES AND STRATEGIC APPROACHES IN DOMESTIC LOGISTICS MARKETING: A STUDY WITH REFERENCE TO COIMBATORE CITY	61
12	STARRY SYMMETRY: A POET'S JOURNEY THROUGH MATHEMATICS AND ASTROLOGY	71
13	FEMINISM & LEGAL PROFESSION AND ITS IMPACT: LEGAL STUDY	75
14	A STUDY ON SATISFACTION LEVEL OF THE EMPLOYEE ON THE VARIOUS WELFARE FACILITIES PROVIDED BY "ARVIN KNITWEAR COMPANY"	79
15	THE IMPACT OF ECONOMIC REFORMS ON PUBLIC ENTERPRISES IN INDIA: CHALLENGES, CONSEQUENCES, AND THE PATH FORWARD	85
16	इजराइल–फिलिस्तीन संघर्ष :– अतीत एवं वर्तमान की समीक्षा	90
17	A STUDY OF CORRELATION BETWEEN SELF-ESTEEM, SUBJECTIVE HAPPINESS AND RELATIONSHIP SATISFACTION IN LONG DISTANCE PARTNERS	95
18	ASSESSING RELATIONSHIP SATISFACTION AMONG MALES AND FEMALES IN LONG DISTANCE RELATIONSHIP	100
19	A STUDY ON IMPACT OF TRANSPORTATION IN THE LOGISTICS INDUSTRIES WITH	105

	REFERENCE TO COIMBATORE	
20	A STUDY ON INVESTMENT DECISIONS WITH RESPECT TO SELECT WORKING PROFESSIONALS	109
21	FORCES UNDERLYING INTERSTATE MIGRATION IN INDIA: TRENDS AND POLICY RESPONSES	116
22	AUTOMATION VS. EMPLOYMENT: THE NEED FOR LEGAL PROTECTIONS AGAINST JOB DISPLACEMENT IN INDIA	122
23	MORE THAN AWARENESS: A ZERO-TOLERANCE POLICY ON SEXUAL HARASSMENT AT WORKPLACE	129
24	TO STUDY ON PUBLIC AWARENESS ABOUT SHARE MARKET WITH SPECIAL REFERENCE TO COIMBATORE SOUTH	135
25	A STUDY ON IMPACT OF DIGITAL MARKETING STRATEGY OF CONVERSE HIGH TOP SHOES WITH SPECIAL REFERENCE TO COIMBATORE CITY	139
26	A STUDY ON CUSTOMER SATISFACTION, CUSTOMER PERCEPTION AND CUSTOMER VALUE OF STARBUCKS IN COIMBATORE	143
27	A STUDY ON CUSTOMER PREFERENCE AND SATISFACTION TOWARDS IMPORTED FOOD PRODUCTS AND BEVERAGES WITH SPECIAL REFERENCE TO COIMBATORE DISTRICT	148
28	ENHANCING STUDENT ENROLLMENT WITH AI CHATBOT TECHNOLOGY	153
29	PANCHAYAT RAJ AND SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS:LOCALIZING THE SDGs IN RURAL INDIA	158
30	A STUDY ON EMPLOYEE JOB SATISFACTION IN SABIN LOGISTICS	164
31	EFFECTIVE DISTRIBUTION OF GOODS USING WAREHOUSES IN COIMBATORE CITY AND TIRUPUR	168
32	AN ANALYTICAL STUDY ON EDIBLE OIL PROCUREMENT STRATEGIES IN SOUTH INDIA	173

Juni Khyat (जूनी ख्यात
(UGC CARE Group I Listed Journal)

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-03, No.06, March: 2025

इजराइल–फिलिस्तीन संघर्ष :– अतीत एवं वर्तमान की समीक्षा

डॉ.योगेंद्र कुमार धुर्वे, सहा.प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) स्व.डारन बाई तारम शास.महाविद्यालय गुरूर, जिला–बालोद (छ. ग.) मिथिलेश अथिति व्याख्याता (राजनीति विज्ञान)रु mithsahu01@gmail.com

ABSTRACT :
इजराइल तथा फिलिस्तीन संघर्ष ने लम्बे समय से क्षेत्रीय और वैश्विक जगत का ध्यान आकर्षित किया है।1 ऐसा लगता है कि विश्व के नेताओं, संयुक्त राष्ट्र और अन्य क्षेत्रीय निकायों द्वारा कई प्रयासों के बावजूद यह संघर्ष कुछ अंतराल के बाद होते रहते है। विवाद का मुख्य कारण, राष्ट्रीय हित न होकर वैश्विक एवं अस्तित्व की लड़ाई बन गया है। दोनों देश अपने धार्मिक आस्था एवं मान्यताओं को लेकर लड़ रहे है।

भारत के आजादी के एक साल बाद 1948 में इजराइल देश अस्तित्व में आया।2 भारत की तरह ही इजराइल में भी ब्रिटिश अधिपत्य था। प्रारंभ में भारत ने इजराइल को एक देश की मान्यता दी। यद्यपि भारत ने इजराइल को एक स्वतंत्र एवं स्वतंत्र राज्य के रूप में मान्यता दी परन्तु 1956 के स्वेज संकट के समय से इजराइल की आक्रमक एवं विस्तार वादी प्रवृत्ति के कारण उसके साथ प्रत्यक्ष संबंध स्थापित नहीं हो सका। जबकि अप्रत्यक्ष रूप से अरब देशों ने भी इजराइल को स्वतंत्र देश के रूप में स्वीकार नहीं किया क्योंकि इजराइल में एवं फिलिस्तीन के बटवारा होने से अरब देश यहूदियों को नफरत की निगाह से देखते थे। यहॉं पर लड़ाई दो देशों के बीच न होकर अब यहुदि बनाम इस्लाम हो गया था। और हर बार इजराइल से फिलिस्तीन को हार मिली (इसके कारण अरब देश इजराइल से चिड़ने लगे। इसी कारण परिणामों का इस शोध पत्र में हम समीक्षा करेंगे।

KEYWORDS साम्राज्य वाद, पी.एल.ओ. फिलिस्तीन, पूर्वी जेरूसलम, गाजापट्टी, पवित्र भूमि, हमास।

प्रस्तावना :–

पश्चिमी एशिया जिसे मध्य पूर्व भी कहते है, अंतर्कलह का घर बना हुआ है। अरब राष्ट्रोंग का अन्तर्कलह लेबनान का ग्रह–युद्ध, इंटाक–ईरान संघर्ष खाड़ी युद्ध और अरबों के साथ इजराइल की नित्य युद्ध भरी भंगिया ने पिछले कई दशकों से पश्चिमी एशिया को हिलाकर रख दिया है। इसमें विश्व के शक्तिशाली देशों की भूमिका तीव्रता पूर्ण रही है। एक और अमेरिका इजराइल को तो वही सोवियत संघ (रूस) अरब देशों का हिमायली बन गया है।
इजराईल तथा फिलिस्टीन नाम का देश 1948 में अस्तित्व में आया। यहां पर पहले ब्रिटिश साम्राज्य की हुकुमत थी। ब्रिटिश सरकार ने भारत तथा पाकिस्तान की तरह इजराइल तथा फिलिस्तीन नाम के दो देश बना दिये तथा राजधानी येवरूेशलम में UN का प्रभुत्व रहा, दोनों देश आपस में शांति व्यवस्था बनाकर येवरूशलम ने अपना शासन करेगें। परंतु फिलिस्तीन में मुस्लमानों की संवा अधिक थी और इजराइल में यहुदियों की संख्या कम थी। वे लेकिन बुद्धि एवं तकनीकी, आर्थिक रूप से समान थे। इसी बात को लेकर फिलिस्तीनी चिड़ते थे। धीरे–धीरे ये यहुदी फिलिस्तीन में भी अपना जमीन ज्याजाद खरीद कर वहां पर बसने लग गये थे। ऐसे में मुस्लमानों पर अधिपत्य होना लाजमी था।

इजराइल एक और अपना विस्तार वादी नीति तथा विद्रोही रवैया के लिए प्रसिद्ध था। ऐसी स्थिति में फिलिस्तीन तथा इजराइल के बीच युद्ध के बादल लहरा रहे थे। दोनों देशों को राजधानी युवेरूशलम में ईसाइयों तथा मुस्लमानों एवं यहुदियों तीनों का पवित्र स्थल माना जाता है कि **इसाई कहते है कि "ईसा मसीह का जन्म यहीं पवित्र स्थान पर हुआ था। वही मुस्लिम समुदाय के लोग कहते है कि हमारा अलेक्सा मस्जिद् यही पर है और यहुदी भी अपने गुरू मुसा का राज्य तथा कर्म उपदेश स्थल इसी (युवेरूशलम) स्थान जगह को मानते है।"** ऐसी स्थिति में स्वतंत्र रूप से दोनों देशों की राजधानी बना देना उचित नहीं है। यही से इजराइल एवं फिलिस्तीन की लड़ाई शुरू होती है। आज तक वे इसी बात को लेकर लड़ रहे है परन्तु हर बार फ़िलिस्तीन को घर का सामना करना पड़ा क्योंकि यहुदि अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे है जबकि फिलिस्तीनी (मुस्लिम) धार्मिक जगह को एक पवित्र स्थल मानकर लड़ रहे है। ऐसे में फिलिस्तीन से लगा हुआ एक जगह गाजा पट्टी है जहां पर (हमास) नामक एक आतंकी संगठन है जो फिलिस्तीन के साथ खड़ा होकर गोरिल्ला युद्ध करता रहता है। कई देश उस संगठन को आतंकी संगठना न मानकर एक आंदोलन कारी संगठन मानते है जो इजराइल सताये हुए है। आजा

Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-03, No.06, March: 2025

गाजा पट्टी पर उनका (हमास) का हि वर्चस्व है। उसको लेबनाम मित्र तथा अन्य अरब देशों का समर्थन प्राप्त है। एक ओर यू.एस.ए. इजराइल को पूर्ण रूप से समर्थन गोला बारूद, प्रदान कर रहा है तो दूसरी ओर फिलिस्तीन (हमास) को अरब देश का पूर्ण समर्थन है। अब युद्ध का हलात ऐसा दोनों देशों में भारी क्षति हुई है। हमास से हमले में 1400 से अधिक इजराइली तथा इजराइल के हमले में 4000 से अधिक फिलिस्तीनी नागरिक, बच्चे, बुढ़े मारे जा चुके है। अब देखना होगा कि भारत का इसमें क्या एक रहेगा क्योंकि भारत हमेशा से शांति का पक्षधर रहा है ऐसे में इजराइल की निंदा नहीं परंतु दोनों देशों को शांति स्थापित करने का आवाह्न किया। इजराइल ने कैसे भारतीय नागरिकों को ऑपरेशन (अजय) के तहत भारत वापस लाया गया यू.एस.ए. भी पूर्ण रूप से इजराइल का समर्थन कर रहा है परंतु इजराइल के हमले से अस्पताल रिहायसी इलाकों में बम गिरने से आम जनता की मृत्यु के कारण यु.एस.ए. के रक्षा मंत्री ने युद्ध में शांति का आह्वान किया। परंतु इजराइल का कहना है कि हम (हमास) के सभी ठिकानों को तबाह किये बिना नहीं रोकेंगे न ही युद्ध विराम करेगें । ये हमारा को हथियार इकट्ठा करने का समय मिल जायेगा और वह फिर से इजराइल पर हमला करेगा। जो हम नहीं चाहते । अरब देश पूरी तरह इजराइल का विरोध कर रहे है तो यू.एस.ए. उसका पूर्ण समर्थन कर रहा है । ऐसे में युद्ध को रोकने के लिए शांति के राह जरूरी है नही तो फिलिस्तीन की तबाही निश्चित है। कई सालों तक उन्हें उनके नागरिकों को यह खामियाजा भुगतना पड़ेगा, जिसके आम लोग हकदार नहीं है।

साहित्य की समीक्षा :–

1. जेम्स एल गेल्विन (2021) :– ''इजराइल फिलिस्तीन संघर्ष'' में बताया गया है कि युरोप के यहुदियों और ओटोमन फिलिस्तीन के अरब निवासियों के बीच राष्ट्रवाद के उदय से लेकर वर्तमान तक के संघर्ष का वर्णन किया गया है और बाहरी दबाओं एवं आंत्रिक तर्क की खोज करता है।
2. डोव वैक्समैन (2019) :–प्रोफेसर डोव ने इस पुस्तक में ''इजराइल फिलिस्तीन संघर्ष:– ''व्हाट एवरीवन नीड्स टू नो'' इस पुस्तक ''इजराइल फिलिस्तीन संघर्ष'' तथा दुनिया को इस संघर्ष की ओर ध्यान खीचने पर मजबूर किया है।

इजरायल फिलिस्तीन संघर्ष का इतिहास :–

बल्फोर घोषणा :–

इजरायल फिलिस्तीन विवाद की नीव 1917 में रखी गयी थी। उस समय के तात्कालीन ब्रिटिश विदेश सचिव आर्थर जेम्स बल्फोर के एक घोषणा के कल स्वरूप उन्होने यहुदियों के लिए नेशनल होने हेतु अधिकारिक समर्थन व्यक्त किया गया था।

फिलिस्तीन का निर्माण :–

अरब एवं यहुदियों हिंसा रोकने में असमर्थ रही और वर्ष 1948 फिलिस्तीन से अपने सेना वापस बुला ली और इससे निपटने के लिए ही नवनिर्मित संयुक्त राष्ट्र संघ को मामला सौप दिया। यू.एन.ने फिलिस्तीन में स्वतंत्र यहुदी और अरब राज्य के निर्माण के लिए एक विभाजन प्रस्तुत किया जिससे सभी अरब देशों ने इसे अस्वीकार कर दिया।

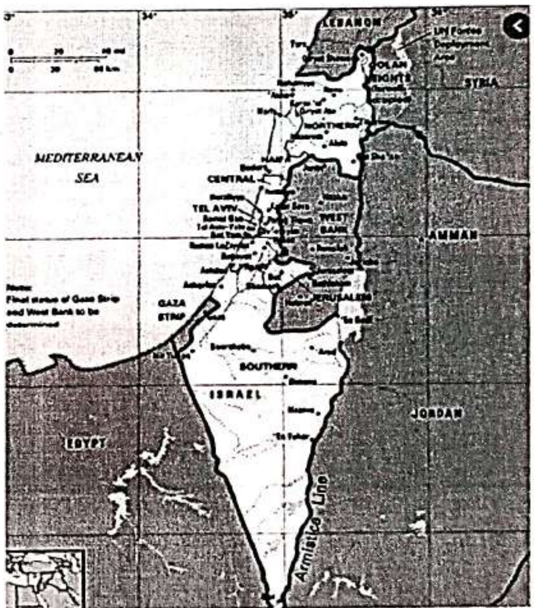

Image source:https://www.britannica.com

अरब इजरायल युद्ध (1948) –

वर्ष 1948 को स्वतंत्र राष्ट्र बनने की घोषणा के बाद अरब देशों ने इजरायल पर आक्रमण शुरू कर दिया। इस युद्ध में अरब देशों के घर हुई और इजराइल को यू.एन. द्वारा मिले 50 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र पर नियंत्रक स्थापित हो गया।

संयुक्त राष्ट्र की विभाजन योजना इस योजना :–

Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-03, No.06, March: 2025

इस योजना के अनुसार गार्डन में वेस्ट बैंक और युवेरूशलम के पवित्र स्थलों तथा मिस्त्र ने गाजा पट्टी पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया किन्तु यह फिलिस्तीनी संकट को हल करने में विफल रहा। जिनके कारण वर्ष 1984 में फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन (पी.एल.ओ.) की स्थापना हुई।

P.L.O :-

फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन की स्थापना को इजराइल और यहुदी प्रभुत्व से मुक्त कराने तथा अरब राज्यों पर मुस्लिम राज्यों का प्रमुख से स्थापित करने के उद्देश्य से बनाया गया था।

हमास का उदय :–

वर्ष 1987 में हमास मिस्त्र के मुस्लिम बदरहुड की एक हिंसक शाखा थी जो हिंसक जिहाद से अपने मनसूबे को पुरा करना चाहता था।

हमास को यू.एस.ए. एक आंतकी संगठन मनता है। 2006 में हमास ने फिलिस्तीनी प्राधिकरण के विधायी चुनाव में जीत दर्ज की और 2007 में फतह को गाजा से अलग कर दिया साथ ही वहां पर अपना नियंत्रण स्थापित कर दिया तथा फिलिस्तीनी आंदोलन को भौगोलिक रूप से भी विभाजित कर दिया।

वर्ष 1987 में वेस्ट बैंक और गाजा के नियंत्रण वाले क्षेत्रों में तनाव चरन पर पहुंच गया जिसके परिणाम स्वरूप पहला फिलिस्तीनी विद्रोह हुआ जो आगे चलकर फिलिस्तीनी उग्रवादियों तथा इजरायली सेना के बीच एक छोटे युद्ध में परिवर्तित हो गया।

वर्ष 1993 में आस्लो समझौते के तहत इजराइल और पी.एल.ओ. अधिकारिक तौर पर एक दूसरे को मान्यता देने एवं हिंसात्मक गतिविधियों पर रोक लगाने पर सहमत हुए इस समझौते से फिलिस्तीनी प्राधिकरण की भी स्थापना हुई जिसने गाजा पट्टी तथा वेस्ट बैंक के कुछ हिस्सों में सीमित स्वत्रंतता स्थापित हो गयी।

2005 रजरमाल ने गाजा क्षेत्र से बहुदियों को वापस लाना शुरू किया हालांकि इजराइल में सभी सीमा पार गमन कर कड़ी निगरानी बनाये रखी।

2012 संयुक्त राष्ट्र में फिलिस्तीन का दर्जा अब गैर सदस्य पर्यवेक्षक राज्य का मान लिया।

पड़ोसी देशों के साथ इजराईल का क्षेत्रीय विवाद :–

वेस्ट बैंक –

वेस्ट बैंक इजरामल और जार्डन के बीच स्थित है। रामल्लाह वेस्ट के बीच स्थित है। रामल्लाह वेस्ट बैंक के प्रमुख शहरों में से एक है, जो फिलिस्तीन का वास्तविक प्रशासनिक राजधानी वर्ष 1967 के युद्ध में इजरामल ने इस पर कब्जा कर लिया तथा पिछले कुछ वर्षो में बस्तियॉ भी बसा लीं है।

गाजा :–

गाजा पट्टी इजरायल और मिस्त्र के बीच स्थित है । इजराईल ने वर्ष 1967 के बाद इस पर नियंत्रण कर लिया किन्तु ओस्ला शांति प्रकियां के दौरान अधिकांश क्षेत्र में गाजा शहर व दिन प्रतिदिन के प्रशासन से नियंत्रण हटा लिया । 2003 में इजराइल ने एकतरफा यहुदी बस्तियों को गाजा क्षेत्र से हटा दिया लेकिन इससे यही पर अन्य राज्यों की पहुंच की नियंत्रित करना जारी रखा है।

गोलान हाइट्स :–

वर्ष 1967 के युद्ध के दौरान इजराईल ने सीरिया से गोलान हाइट्स पर कब्जा कर लिया और वर्ष 1982 में इस पर पूर्ण रूप कब्जा कर दिया। हॉल ही में अमेरिका ने अधिकारिक तौर पर यरूशलम और गोलान हाइट्स को इजरायल के हिस्से के रूप में मान्यता दी है।

शोध का उद्देश्य :–

1. इजराइल फिलिस्तीन संघर्ष के महत्वपूर्ण बिंदुओं का अध्ययन करना।
2. इजराइल फिलिस्तीन संघर्ष के राजनैतिक, आर्थिक एवं ऐतिहासिक पहलुओं को समझना।

Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-03, No.06, March: 2025

3. इजराइल फिलिस्तीन के भौगोलिक सीमा का अध्ययन।
4. इजराइल फिलिस्तीन के वैश्विक परिदृश्य को समझाना।

समस्या का चयन :–

इजराइल फिलिस्तीन के ऐतिहासिक एवं वैश्विक जगत में हुए संघर्ष के कारणों का अध्ययन करना। तथा इजराइल फिलिस्तीन संघर्ष से भारत पर पड़े प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :–

1. इजराइल फिलिस्तीन संघर्ष के इतिहास को समझना ।
2. UNO के विभाजन नीति की समस्या।
3. इजराइल फिलिस्तीन संघर्ष में शांति बहाली के लिए भारत की भूमिका सर्वपरि होनी चाहिए।

शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध निबंध में अधिकतर द्वितीयक स्रोतों (समंको का निर्वचन) एवं विश्लेषण किया गया।

पिछले कुछ वर्षो में इजरायल और भारत के संबंध :–

(A) भारत सन 1947 में संयुक्त राष्ट्र की विभाजन योजना का विरोध करने वाले कुछ देशों में एक था।
(B) भारत ने वर्ष 1950 में इजरायल को मान्यता दी थी, लेकिन फिलिस्तीन विबरेशन ऑर्गनाइजेशन (पी.एल.ओ.) को फिलिस्तीन के एक मात्र प्रतिनिधि के रूप में मान्यता देने वाला यह पहला गैर अरब देश भी है। भारत ने 1988 में फिलिस्तीन को राज्य का दर्जा देने वाले पहले देशों में से एक हैं।
(C) हॉल के दिनों में भारत का रूख दी हाईकेनेशन नीति की ओर देखा जा रहा है अर्थात इजरायल के साथ मैत्री पूर्ण संबंधों में संतुलन बनाये रखना तथा हॉल कि स्थिति में भारत इजरायल का समर्थन करते हुए दिखाई दे रहा है।

आगे की राह :–

(A) दोनों देशों को विश्व शांति की राह में चलकर इसका शांति पूर्ण समाधान खोजने की जरूरत है।
(B) अरब देशों द्वारा इजरायल के साथ अनुकूल संबंध बनाये रखना चाहिए।
(C) बहुपत्रीय संगठनों में भारत की भूमिका के लिए मध्य पूर्व और पश्चिम एशिया में सुरक्षा एवं स्थिरता के लिए सभी पक्षों में सहयोग करें।
(D) भारत 2021–22 की संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का एक गैर स्थायी सदस्य है तथा 2022–24 के लिए मानवाधिकार परिषद के लिये पुनः चुना गया था। इस तरह भारत को इजरायल–फिलिस्तीन मुद्दे को सुलझाने के लिए मध्यस्थ के रूप में कार्य करना चाहिए।

निष्कर्ष / सुझाव :–

1. (Two State Solution) सबसे व्यापक रूप से समर्पित प्रस्ताव में से एक है इसे आगे बढ़ाना।
2. इजराइल फिलिस्तीन के बीच संघर्ष को रोकने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रयास करना चाहिये।
3. वेस्ट बैंक एवं राजा पट्टी के बीच और फतह एवं हमास के बीच फिलिस्तीनी नेतृत्व का विभाजन तथा विखण्डन करना चाहिये।
4. दोनों देशों को हिंसा असंतोष में वृद्धि के कारणों को खोजकर पूर्णतः निपटारा पर बल देना चाहिए और सहअस्तित्व और संवाद से आगे बढ़ना चाहिये।

REFERENCE :

1. डॉ.सोनली सिंह (2021) इजराइल फिलिस्टीन के प्रति भारतीय नीति : एक ऐतिहासिक परिपेक्ष्य अभिमत प्रकाशन पृष्ठ–115
2. जे.सी. जेमन और डालुना अशाफ (2021) : इजराइल फिलिस्तीन संघर्ष : अतीत वर्तमान की समीक्षा।

Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-03, No.06, March: 2025

3. बी.एल.फड़िया (2022)फिलिस्तीन समस्या एवं अरव इजराइल, साहित्य भवन पाब्लिकेशन आगरा, पृष्ठ–508
4. द हिन्दू 10 अक्टूबर 2023.
5. द हिन्दू 17 अक्टूबर 2023.
7. दृष्टि आई.एस. विश्लेषण 2023.
8. दैनिक भास्कर पत्रिका 17 अक्टूबर 2023.
9. वही 18 अक्टूबर 2023.
10. वही 21 अक्टूबर 2023.
11. बी.एल.फड़िया (2022)फिलिस्तीन समस्या एवं अरब इजराइल, साहित्य भवन पाब्लिकेशन आगरा, पृष्ठ–508–509.
12. इंडियन एक्सप्रेस 2023.
13. Kumarswa my (2019) Indias New.
14. Isreal Policy, March- 2019
15. दृष्टि आई.एस. नोट्स 2023–2024
16. दैनिक भास्कर 20 अक्टूबर 2023.
17. वही 22 अक्टूबर 2023.
18. वही 24 अक्टूबर 2023.
19. वही 26 अक्टूबर 2023.
20. इंडियन एक्सप्रेस में प्रकाशित लेख (Israls movement of reckoning), 09/10/2023
21. The Hindu 20 October 2023,
22. Gelvin .L.James (2021) The Israls Palestine conflict, Combrigge Univercity press.
23. डोव वैक्समैन (2019) :– "इजराइल फिलिस्तीन संघर्षः– "व्हाट एवरीवन नीड्स टू नो", ऑक्सपोर्ट विश्वविद्यालय प्रेस।`

Copyright @ 2025 Author

'जूनी ख्यात' सम्पादक मण्डल

प्रो. हरबंस मुखिया	इतिहास	जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रो. वसन्त शिंदे	पुरातत्त्व एवं प्राचीन इतिहास	पूर्व कुलपति दक्कन कॉलेज, पूना
प्रो. दिलबाग सिंह	राजस्थान इतिहास	जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रो. जी.एस.एल. देवड़ा	मध्यकालीन इतिहास	पूर्व कुलपति, वर्धमान महावीर खुला विवि., कोटा (राज.)
प्रो. एस. इनायत अली ज़ैदी	इतिहास विभाग	जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रो. सीताराम दुबे	प्राचीन इतिहास	बी.एच.यू., वाराणसी
प्रो. चन्द्रपाल सिंह चौहान	शिक्षा	अलीगढ़ मुस्लिम वि.वि., अलीगढ़ (उ.प्र.)
प्रो. बी. एस. शर्मा	राजनीति शास्त्र	राजस्थान विवि., जयपुर
प्रो. सूरजभान	मध्यकालीन इतिहास	दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली
प्रो. किशोरकुमार अग्रवाल	क्षेत्रीय इतिहास	पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि., रायपुर
प्रो. रामेश्वरप्रसाद बहुगुणा	मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन	जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रो. विपुलसिंह	पर्यावरण इतिहास	दिल्ली वि.वि., दिल्ली
प्रो. जीवनसिंह खरकवाल	प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्त्व	साहित्य संस्थान जे.आर.एन, विद्यापीठ, उदयपुर